संस्कृत-भाग

यहां पर आपको शब्द- शब्द का तोड़-तोड़कर हर लाइन का अलग-अलग हिंदी अनुवाद दिया जा रहा है। महत्वपूर्ण गद्यांश/पद्यांश पृथक से एक साथ दिए जा रहे हैं। प्रत्येक पाठ के सभी श्लोक तिरछे वर्णों में छपे हैं ।

भोजस्यौदार्यम्

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक के **संस्कृत-भाग** के **'भोजस्यौदार्यम्'** नामक पाठ से उद्धृत है।

www.gyansindhuclasses.com

- **ततः कदाचिद् द्वारपाल आगत्य महाराज भोज प्राह**
  इसके बाद कभी द्वारपाल ने आकर महाराज भोज से कहा-
- **'देव, कौपीनावशेषो विद्वान् द्वारि वर्तते' इति।**
  "देव! जिसके तन पर केवल लँगोटी ही शेष है, ऐसा विद्वान् द्वार पर खड़ा है।
- **राजा 'प्रवेशय' इति प्राह ।**
  राजा 'प्रवेश कराओ' ऐसा बोले ।
- **ततः प्रविष्टः सः कविः भोजमालोक्य-**
  तब प्रवेश करके उस कवि ने भोज को देखकर-
- **अद्य मे दारिद्र्यनाशो भविष्यतीति मत्वा तुष्टो हर्षाश्रूणि मुमोच।**
  आज मेरी दरिद्रता का नाश हो जाएगा ऐसा मानकर प्रसन्न होकर हर्ष के आंसू गिराए।
- **राजा तमालोक्य प्राह-**
  राजा ने उसको देखकर कहा-
- **'कवे! किं रोदिषि' इति।**
  'हे कवि! क्यों रोते हो?'
- **ततः कविराह- राजन्! आकर्णय मद्गृहस्थितिम्**
  तब कवि बोला- राजन् मेरे घर की दशा सुनिए-
- ***अये लाजानुच्चैः पथि वचनमाकर्ण्य गृहिणी***
  अरे 'खीलें लो' ऐसा ऊंचे स्वर से (रास्ते में बेचने वाले की आवाज) सुनकर दीनमुख वाली मेरी पत्नी ने
- ***शिशौः कर्णौ यत्नात् सुपिहितवती दीनवदना ।।***
  बच्चे के कानों को यत्नपूर्वक बन्द कर दिया
- ***मयि क्षीणोपाये यदकृतं दृशावश्रुबहुले***
  और मुझ उपायहीन पर जो आंसुओं से भरी दृष्टि डाली
- ***तदन्तःशल्यं मे त्वमसि पुनरुद्धर्तुमुचितः ।।***
  वह मेरे हृदय में बाण के समान चुभी है, जिसे आप ही निकालने में समर्थ हैं ।
- **राजा शिव, शिव इति उदीरयन् प्रत्यक्षरं लक्षं दत्त्वा प्राह-**
  राजा ने शिव, शिव कहते हुए प्रत्येक अक्षर पर एक लाख देकर कहा-
- **'त्वरितं गच्छ गेहम्, त्वद्गृहिणी खिन्ना वर्तते।'**
  शीघ्र ही घर जाओ तुम्हारी पत्नी दुःखी है ।
- **अन्यदा भोजः श्रीमहेश्वरं नमितुं शिवालयमभ्यगच्छत्।**
  दूसरे दिन भोज भगवान शिव को नमस्कार करने के लिए शिव मन्दिर गए।

www.gyansindhuclasses.com

- **तदा कोपि ब्राह्मण : राजानं शिवसन्निधौ प्राह-देव!**
  तब कोई ब्राह्मण राजा से शिव के सामने बोला, हे देव!
- ***अर्द्धं दानववैरिणा गिरिजयाप्यर्द्धं शिवस्याहृतम्***
  शिवजी का आधा अंग विष्णु ने और आधा पार्वती ने ले लिया है।
- ***देवेत्थं जगतीतले पुरहराभावे समुन्मीलति।।***
  इस पृथ्वी तल पर भगवान् शिव के देह रहित हो जाने पर।

- ***गङ्गा सागरमम्बरं शशिकला नागाधिपः क्ष्मातलम्***
  गंगा समुद्र में मिल गई, चन्द्रकला आकाश को शेषनाग पृथ्वीतल से नीचे पाताल में,
- ***सर्वज्ञत्वमधीश्वरत्वमगमत् त्वां मां तु भिक्षाटनम्।।***
  सर्वज्ञता और ईश्वरता आपको प्राप्त हुई और भिक्षाटन (भीख मांगना) मुझमें आ गया है।
- **राजा तुष्टः तस्मै प्रत्यक्षरं लक्षं ददौ।**
  राजा ने सन्तुष्ट होकर उसके लिए प्रत्येक अक्षर पर एक लाख दिया।
- **अन्यदा राजा समुपस्थितां सीतां प्राह-**
  दूसरे दिन राजा ने उपस्थित हुई सीता (नामक कवयित्री) से कहा-
- **'देवि! प्रभातं वर्णय' इति। सीता प्राह-**
  देवी! प्रभात काल का वर्णन करो। सीता ने कहा-
- ***विरलविरलाः स्थूलास्तारा : कलाविव सज्जनाः***
  कलियुग में सज्जनों के समान ही कोई-कोई बड़े तारे दिखाई दे रहे हैं ।
- ***मन इव मुनेः सर्वत्रैव प्रसन्नमभून्नभः।।***
  मुनि के मन के समान आकाश सर्वत्र स्वच्छ हो गया है
- ***अपसरति ध्वान्तं चित्तात्सतामिव दुर्जनः***
  और सज्जनों के चित्त से दुष्ट के समान अन्धकार दूर हो रहा है
- ***व्रजति च निशा क्षिप्रं लक्ष्मीरनुद्यमिनामिव।।***
  और प्रयत्नहीन व्यक्तियों की लक्ष्मी के समान रात्रि भी शीघ्रता से भागी जा रही है
- **राजा तस्य लक्षं दत्त्वा कालिदासं प्राह-**
  राजा ने उसे एक लाख देकर कालिदास से कहा-
- **'सखे! त्वमपि प्रभातं वर्णय' इति।**
  मित्र! तुम भी प्रभात का वर्णन करो।
- **ततः कालिदासः प्राह-**
  तब कालिदास ने कहा-
- ***अभूत् प्राची पिङ्गा रसपतिरिव प्राप्य कनकं***
  पूर्व दिशा सोने से मिलने पर पारे के समान पीली हो गई है।
- ***गतच्छायश्चन्द्रो बुधजन इव ग्राम्य सदसि।***
  चन्द्रमा ग्रामीणों की सभा में विद्वान् के समान छविहीन हो गया है,
- ***क्षणं क्षीणास्तारा नृपतय इवानुद्यमपराः***
  उद्यमहीन राजाओं के समान तारे क्षण भर में क्षीण हो गए हैं
- ***न दीपा राजन्ते द्रविणरहितानामिव गुणाः।।***
  और धनहीनों के गुणों के समान दीपक शोभित नहीं हो रहे हैं।
- **राजातितुष्टः तस्मै प्रत्यक्षरं लक्षं ददौ।**
  राजा ने अत्यधिक सन्तुष्ट होकर उसे भी प्रत्येक अक्षर के एक लाख दिए।

www.gyansindhuclasses.com

www.gyansindhuclasses.com